आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 3/अंक 1/जनवरी 2023
Received:20/01/2023; Published:31/01/2023

लेख

महिला

डॉ. शोभना. एस

मूल: मौन गौरी 'पुष्पा' (कन्नड़)

लड़की पैदा होती है तो पूछते है लड़की है क्या। लड़की को अपमान का चिन्ह मना गया था। अब वह रवैया कुछ हद तक बदल गया है। एक बेटी ही बूढ़े माता-पिता का सहारा होती है। एक महिला भी पुरुष के साथ-साथ आंतरिक और बाहरी दुनिया से लड़ने में सक्षम है। "यदि इस संसार में पुरुष का प्रकाश चमकना है, तो स्त्री की बत्ती और तेल को जलाने की आवश्यकता है"।

हाल ही में, कन्या- भ्रूण हत्या में कमी आई है और लिंगानुपात में सुधार हुआ है, हम वैज्ञानिक रूप से आगे बढ़ते हुए भी, लड़का की लालसा आज भी कम नहीं हुआ है और पुत्र जन्म से ही मुक्ति पाने की सोच से आज भी लोग मुक्त नहीं हुए हैं।

स्त्री प्रकृति की तरह होती है, यदि वह हिम्मत करे तो विकृत कर सकती है, चाहो तो वरदान या शाप दोनों भी हो सकती है। भविष्य में भी सुशिक्षित समाज में महिलाओं के खिलाफ समाज की रवैया और शोषण कम होगी यह आशा है कन्या भ्रूण हत्या समाप्त होगी और सभी को यह एहसास होगा कि एक बेटी परिवार के लिए एक बेटे की तरह महत्वपूर्ण है।

"महिला होना हीन नहीं बल्कि गर्व की बात है "।

****